अर्हम्

साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा

31 अगस्त 2011

भक्ति की नाव से पाएं भवतृष्णा का पार

- साध्वीश्री कनकश्रीजी

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी की प्रबुद्ध शिष्या साध्वीश्री कनकश्रीजी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व का छठा दिन जप दिवस के रूप में मनाया गया। साउथ कलकत्ता तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित धर्म परिषद् में साध्वीश्री कनकश्रीजी ने कहा - मनुष्य जीवन की सार्थकता में सद्धर्म श्रवण और महापुरुषों का सान्निध्य अत्यंत जरूरी है। इसके अतिरिक्त प्रभु भक्ति और गुरु भक्ति में ऐसी शक्ति है भक्त की जीवन नौका को वह विषय तृष्णा और भवतृष्णा से पार लगा देती है।

साध्वीश्री ने तीर्थंकर महावीर और तथागत बुद्ध के जन्म - कालीन प्रसंगों को सुनाते हुए उन्हें अलौकिक महापुरुष बताया, जिनके उपदेश आज भी अंधकार में दिव्य रोशनी का काम कर रहे हैं। चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति रचित 'चतुर्विंशतिस्तव' पर अत्यंत प्रभावी प्रवचन करते हुए उन्होंने कहा - अर्हतों की स्तुति से आरोग्य, बोधि और परम समाधि उपलब्ध होती है।

साध्वीश्री मधुलताजी ने 'मंत्र जाप' के बारे में अपने मंजे हुए विचार व्यक्त करते हुए कहा - मंत्र वह है जो मंजिल तक पहुंचाएं। मंत्र वह है जो साधक के मन को शान्ति और आनंद से तर - बतर कर दें, भिगोदे। उन्होंने कहा - विधिपूर्क इष्ट मंत्र का नियमित लम्बे समय तक जाप करने से आंतरिक शक्तियां जागती हैं। चेतना पारदर्शी बनती है और इष्ट सिद्धि होती है। विषय पर भावपूर्ण मधुर गीत का संगान कर साध्वीश्रीजी ने पूरी सभा को संगीतमय बना दिया। उत्तरांचल की बहनों ने मंगल संगान किया।